संरक्षण कृषि पर चतुर्थ विश्व सम्मेलन

टिकाऊ खाद्य सुरक्षा के लिए संसाधन संरक्षण

नई दिल्ली, 6 फरवरी । श्री शरद पवार, केंद्रीय कृषि एवं उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री ने बुधवार को संरक्षण कृषि पर चौथे विश्व सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर कहा कि कृषि उत्पादन व कृषि आय में बढ़ोतरी, तीव्र गति से कृषि का विकास एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से संबद्ध कुछ प्रमुख चुनौतियां हैं जिनका आज पूरा विश्व सामना कर रहा है । अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में विकास की धीमी गति एक महत्वपूर्ण घटना है जिसने विगत दशक के दौरान सभी देशों के किसानों, विशेष रूप से गरीब देशों के किसानों को प्रतिकूल तरीके से प्रभावित किया है । संरक्षण कृषि में इन सभी चुनौतियों से निपटने की क्षमता है ।

कृषि मंत्री ने यह भी कहा कि वर्षा–आधारित कृषि पर प्राथमिक तौर पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि सिंचाई सुविधाओं के पूर्ण उपयोग के बाद भी लगभग आधा कृषि क्षेत्र वर्षा पर ही निर्भर रहता है ।

संरक्षण कृषि पर चौथा विश्व सम्मेलन 4–7 फरवरी, 2009 के दौरान एनएएससी कॉम्पलैक्स, नई दिल्ली में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद व राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया जा रहा है । विश्व के विभिन्न भागों से आये वैज्ञानिक, नीति सलाहकार, किसान संगठन, उद्यमी एवं गैर–सरकारी संगठनों के 1000 से अधिक प्रतिनिधि सम्मेलन में भाग ले रहे हैं । ये 48 देशों से अधिक, जिसमें विकसित व विकासशील देश सम्मिलित हैं, के प्रतिनिधि हैं ।

भूख एवं गरीबी उन्मूलन हेतु संरक्षण कृषि की भूमिका पर बल देते हुए प्रो. एम.एस. स्वामिनाथन, राज्यसभा सदस्य एवं प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक ने संरक्षण कृषि को प्राकृतिक संसाधनों की ओर व्यावहारिक बदलाव के तौर पर लिया । उन्होंने कहा कि हमें पारिस्थितिकी संतुलन में नुकसान पहुंचाए बिना, निरंतर उत्पादकता को बढ़ाने की जरूरत है, विशेष रूप से छोटे खेतों में । उन्होंने प्रथम राष्ट्रीय कृषक नीति जारी करने के लिए सरकार द्वारा किये गये प्रयासों की सराहना की ।

अंतर्राष्ट्रीय संचालन समिति के अध्यक्ष एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक, डॉ. मंगला राय ने अपनी टिप्पणी के दौरान कांग्रेस की विषय–वस्तु तथा इसके लक्ष्यों को स्पष्ट किया । उन्होंने उम्मीद जतायी कि कांग्रेस में होने वाला विचार–विमर्श भारतीय कृषि के समक्ष मौजूद चुनौतीपूर्ण मुद्दों के समाधान के लिए उचित रास्ता खोजेगा ।

डा. राय ने सत्र में अपने व्याख्यान के दौरान बताया कि जब संसाधनों और निवेशों को भली प्रकार उपयोग नहीं किया जाता तो खेती की लागत बढ़ने के साथ ही प्रदूषण बढ़ता है और उत्पादन कम हो जाता है । उपलब्ध अनुमानों के अनुसार यदि जल उपयोग की कुशलता 10 प्रतिशत बढ़ा दी जाए तो वर्तमान सिंचित क्षेत्र से देश को 5 करोड़ टन अतिरिक्त खाद्यान्न प्राप्त हो सकता है ।

विश्व बैंक की उपाध्यक्ष डा. कैथेरीन सियेरा ने कहा कि समानता और पर्यावरण में सुधार के लिए संरक्षण कृषि एक महत्वपूर्ण और समयानुकूल माध्यम है । उन्होंने उपस्थित वैज्ञानिकों तथा अन्य प्रतिभागियों को संरक्षण कृषि पर अनुसंधान तथा विकास को प्रोत्साहन देने के लिए विश्व बैंक द्वारा चलायी जा रही योजनाओं और कार्यक्रमों की जानकारी दी । डा. थॉमस ए. लमकिन, महानिदेशक, सिमिट, मैक्सिको ने संरक्षण कृषि को संसाधन उत्पादकता और कुशलता बढ़ाने का महत्वपूर्ण जरिया बताया । उन्होंने कहा कि संरक्षण कृषि को फसल प्रबंधन अनुसंधान की मुख्य धारा में शामिल करना चाहिए और इसे फसल प्रजनन तथा अन्य कृषि विषयों से भी जोड़ना चाहिए । संरक्षण कृषि विकास का कोई वैकल्पिक रास्ता नहीं है, बल्कि यह उज्ज्वल भविष्य के लिए एक प्रभावकारी माध्यम भी है ।

डा. आर. के. मलिक, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार ने सिमिट, इंडिया के डा. आर. के गुप्ता के साथ एक सत्र में बताया कि संरक्षण कृषि एक ऐसा उपाय है जो भारत में पिछले अनेक वर्षों से अपनाया जा रहा है और इसके अनेक लाभ प्राप्त हुए हैं । डा. मलिक ने भारत में हासिल अनेक सफलताओं का उदाहरण देते हुए बताया कि इसे अपनाने से धान–गेहूं प्रणाली में संसाधनों की कुशलता में वृद्धि होती है । उन्होंने कहा कि हरित क्रांति ने केवल राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा को मजबूत किया है, जबकि संरक्षण कृषि /संसाधन संरक्षण तकनीकें खाद्य सुरक्षा के साथ गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास, उत्पादकता वृद्धि, पर्यावरण सुधार और राष्ट्रीय संसाधनों के संरक्षण में भी योगदान देती है ।

सम्मेलन में हुए अनेक तकनीकी सत्रों में देश–विदेश से आए वैज्ञानिकों ने संरक्षण कृषि से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर अपने शोध आलेख प्रस्तुत किए । ये विषय हैं – मृदा और अवशेष प्रबंध, निवेश प्रबंध, आनुवंशिक नीतियां, सहभागी दृष्टिकोण ओर संबंध, तकनीकी विकास और प्रसार के लिए समेकित दृष्टिकोण, क्षमता विकास, सशक्तिकरण नीतियां और जैव विविधता ।

इस अवसर पर एक कृषि प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया है, जिसमें संरक्षण कृषि से जुड़ी विभिन्न तकनीकों, उपकरणों तथा साहित्य को प्रदर्शित किया गया है । इसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तथा सार्वजनिक व निजी क्षेत्र के अनेक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा भाग लिया जा रहा है । प्रदर्शनी में वैज्ञानिकों के अलावा किसानों ने भी अपनी रूचि दिखायी । सम्मेलन में भाग ले रहे प्रतिभागियों को उत्तर प्रदेश और हरियाणा के गांवों में ले जाया जा रहा है ताकि वे संरक्षण कृषि को अपनाने वाले किसानों के खेतों में इसका लाभ प्रत्यक्ष रूप से देख सकें ।